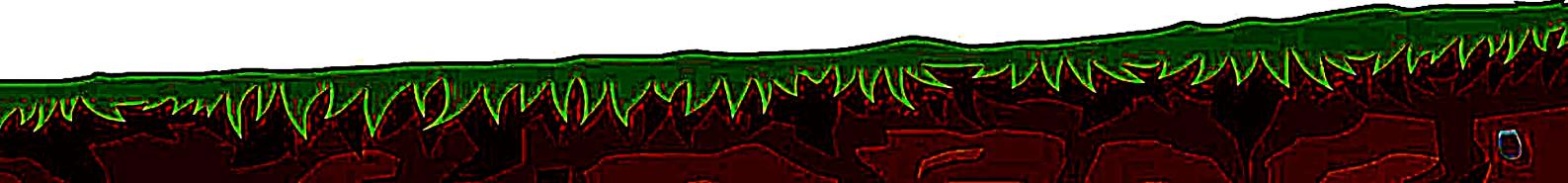


ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

विस्वाँ सीतापुर



" अद्वैत भक्ति "

हे प्रभु महिमा आपकी,

अगम, अनन्त, अपार !

नेति, नेति, अज, श्रुति कहें,

जन अधीन किमि पार !!

चार वेद, षट शास्त्र सब,

अष्टादशम् पुराण !

कहें सभी सतगुरु बिना,

मिले न पद निर्वाण !!

ब्रम्हा, विष्णु, महेश सब,

इन्द्र, देवता सारे !

भेद किसी ने पाया नाहीं,

सब हो गये किनारे !!

ध्यान, भजन, जप, तप किये,

जीव मुक्त न होय !

सन्मुख होवे जीव यदि,

मोक्ष, मुक्ति सब होय !!

“ अद्वैत भक्ति ”

“ परमात्मा प्राप्ति के लिए
केवल अद्वैत को जानो ”

जीव और आत्म एक हौ,

इसे कहें अद्वैत !

अलग - अलग जब तक रहें,

तब तक कहते द्वैत !!

तन, मन, सुरत के धर्म हैं,

परमधर्म है जीव !

जीव हो सन्मुख आत्म के,

जीव बने फिर पीव !!

आत्मभक्ति , सन्मुख केवल,

द्यान, भजन कुछ नहिं !

द्यान, भजन सब द्वैत में,

द्वैत में सन्मुख नहिं !!

द्वैत की साधना से देवलोक

और ब्रह्मलोक प्राप्त होता है :-

द्वैत छोड़ि, अद्वैत को जानों,

परमात्म को तुम पहिंचानो !

प्रेम, योग, जप, तप नहीं,

क्रिया, कर्म और ध्यान !

इनसे आत्म न मिले,

यह सब द्वैत हैं जान !!

प्रेम, भक्ति सब मन करे,

जप, तप, योग और ध्यान !

जीव तो कुछ न कर रहा,

इसे कहें अज्ञान !!

क्रिया, इन्द्रियाँ कर रहीं,

मन कर रहा है कर्म !

जीव तो कुछ न कर रहा,

यह नहिं जीव का धर्म !!

मन और सुरत यात्रा करें,

यात्रा करे न जीव !

यह अद्यात्मिक सफर नहिं,

कैसे मिले वह पीव !!

चले जहाँ से हो वहीं,

यह यात्रा न होय !

जीव जो दूरी तय करे,

यात्रा कहिये सोय !!

मन और आत्मा के पंथ :-

द्वैत पंथ, मन पंथ है,

आत्म पंथ अद्वैत!

ध्यान, भजन मन पंथ में,

सन्मुख होना अद्वैत!!

अन्दर, बाहर के पंथ को,

कहते है मन पंथ !

अन्दर, बाहर जो नही,

वही है आतम पंथ !!

मैं कर्ता, मन पंथ में,

आतम में मैं नाहिं !

आतम पंथ घटित हो,

कोई कर्ता नाहिं !!

(I) यह भी जानो :-

(1) (I) अध्यात्म क्या है :-

जिसमें जीव, आत्मा के सन्मुख हो !

(II) ज्ञान क्या है :- इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को ज्ञान कहते हैं !

(III) विज्ञान क्या है :- मन
की आँख से अन्दर के प्रकाश को
देखना विज्ञान है !

(IV) प्रज्ञान क्या है :- सुरत
से अनहृदनाद को सुनना प्रज्ञान
है !

(2) अद्वैत क्या है :- जीव और
आत्मा दोनों मिलकर एक होने को
अद्वैत कहते हैं !

(3) एकात्म अवस्था क्या है :-

जीव, मन, सुरत और आत्मा सब
को मिलकर एक होने को एकात्म
अवस्था कहते हैं !

(4) सन्मुख होना क्या है :-

- (I) जीव, जगत, परमात्मा केवल तीन
ही हैं !**
- (II) जगत में मन और सुरत आते हैं !**
- (III) जीव की दृष्टि जगत पर है !**

(IV) मन और सुरत को शून्य कर दो,
जीव और आत्मा सन्मुख हो
जायेंगे !

(V) जीव को आत्मा के सन्मुख करने
को ही अध्यात्म कहते हैं !

(5) भक्ति क्या है :-

(I) जीव केवल मन को सहज करके,
शून्य करके परमात्मा के सन्मुख हो
जाता है ! सन्मुख होना ही भक्ति है !

(6) ध्यान, योग और भक्ति में क्या अन्तर है :-

(I) ध्यान में :- मन की साधना की
जाती है !

(II) योग में :- सुरत की साधना की जाती है !

(III) भक्ति में :- जीव केवल आत्मा के सन्मुख होता है !

(7) भक्ति क्यों की जाती है :-

जीव और आत्मा दो अलग -

अलग हैं दोनों को मिलकर एक होना है !

(8) भक्ति का उद्देश्य क्या है:-

जीव को आत्मा में मिलाकर एक होना!

(9) भक्ति का सिद्धांत क्या

है :- (मन के परदों को समाप्त
करना)

मानुष तुम सब हो नहीं,

मानुष तेरी देंह !

अन्दर के पट यदि खुलें,

सन्मुख होइ विदेह !!

शरीर के अन्दर मन और सुरत के परदों को खोलना है, समाप्त करना है, शून्य करना है !

पर्दे समाप्त होने से परमात्मा जीव के सन्मुख तुरन्त हो जायेगा !

- (I) मन के पर्दे सात प्रकाश हैं !
- (II) सुरत के पर्दे अनहदनाद हैं !

(10) भक्ति से लाभ क्या है:-

जीव, मन और सुरत का कायाकल्प हो जाता है !

**** जीव :- जीव से पीव, बृद्ध से
समुद्र, जीव, आत्मा से मिलकर
एक हो जाता है !**

**** मन :-**

- (I) कौवा से हंस !
- (II) मानस रोग समाप्त !
- (III) काग गमन गति से हंस
गमन गति !

(IV) कुमति बदलकर सुमति हो
जाती है !

(V) मन बदलकर अमन हो
जाता है !

(VI) माया और भवसागर
समाप्त हो जाता है !

** सुरत :-

(I) गति स्थिर हो जाती
है !

(II) प्रज्ञा चक्षु खुल जाते
हैं !

(III) सुरत आत्मा से
मिलकर एक हो जाती
है !

(IV) सुरत की दृष्टि विवेक
दृष्टि में बदल जाती
है !

(11) मन की विशेषता :-

“ मन ” ही मनुष्यानाम् , बंधनम्
मोक्ष कारणम् !

(I) हमारे पास मन यह एक ऐसा
उपहार रूप है जिससे हमारे संसार
के सभी काम पूरे होंगे और हमें
परमात्मा भी मिल जायेगा !

**(II) मन मुख्य होने के कारण ही हम
मनुष्य हैं !**

**(III) केवल हमें मन का सही संचालन
करना सीखना है !**

**(12) मन का संचालन जीव
कैसे करे :-**

**संसार में जीव का संचालन मन
कर रहा है, जो मन कहता है वही**

जीव करता है ! इसे बदलकर जीव
को मन का संचालन करना है !
यह संचालन दो प्रकार से होता है!

(I) संसार के सभी कामों के
लिए :-

(I) मन का स्विच ऑन करना है
और संसार के सभी काम पूर्ण
करना है !

(II) सुरत को मन के साथ में रखना
है !

(II) परमात्मा प्राप्ति के लिए :-

मन का स्विच ऑफ कर देना है !

यह स्विच ऑन और स्विच
ऑफ की प्रक्रिया जब जीव करने
लगे तो समझो मन का संचालन
जीव के हाथ में है !

**(III) इसके लिए मन को कागा से हँस
बनाना पड़ता है !**

**(IV) भाव, विचार और मन से पार होना
पड़ता है !**

(13) मन को सच्चा मित्र कैसे बनायें :-

संसार की उन्नति मन

के अधीन है ! इसलिए :-

- (I) मन को कागा से हँस बनाना है !
- (II) पॉजिटिव विचार और ऊँची सोच सिखाना है !
- (III) पॉजिटिव भाव सिखाने हैं और निगेटिव भाव हटाने हैं !

पॉजिटिव भाव :- प्रेम,

**प्रसन्नता, खुशी, आनन्द, हँसी
इत्यादि !**

निगेटिव भाव :- दुःख, तकलीफ,

**गुस्सा, मुसीबत, चिन्ता, ईर्ष्याद्वेष
इत्यादि !**

(14) जीव और मन को

परमात्मा के सन्मुख क्यों

होना है :-

- (I) जो परमात्मा से विमुख है, वह
संसार में हारता ही रहता है !**
- (II) संसार को जीतने के लिए !**
- (III) परमात्मा जैसा जीव को होने के
लिए !**

**(IV) मन को मित्र बनाने के लिए और
मन को कागा से हँस बनाने के
लिए !**

**(V) जीव, मन, सुरत और आत्मा सबको
एक में मिलकर एक होने के लिए !**

**(VI) “मन” का संचालन जीव द्वारा
होने के लिए !**

**(VII) मन को मनोतीत, विचारातीत,
भावातीत, करने के लिए !**

**(VIII) जीव को पूर्णता प्राप्त करने के
लिए !**

(15) देह अभ्यास को त्यागना

है :-

देह अभ्यास का अर्थ है कि
हमें सभी शरीरों का अभ्यास या
साधना को त्यागकर केवल हमें
(जीव को) विदेह (आत्मा) के
सन्मुख होना है !

(16) हमारे (जीव के) सभी शरीर या कोश :-

(I) स्थूल शरीर या अन्नमय कोश !

(II) सूक्ष्म शरीर या प्राणमय कोश !

(हवा वाला शरीर)

(III) मन वाला शरीर या मनोमय कोश !

(1) विचार वाला शरीर !

(2) भाव वाला शरीर !

(IV) कारण शरीर या विज्ञानमय कोश

:- यह प्रकाश वाला शरीर है ! इसमें

सात रंग के प्रकाश है ! इन्हें ही

सात स्वर्ग कहते हैं !

(V) महाकारण शरीर या आनन्दमय

कोश :- यह अनहंदनाद वाला शरीर है, इसमें बहुत प्रकार की ध्वनियाँ हो रही हैं और ध्वनियों से सम्बन्धित अलग - अलग शब्द भी हो रहे हैं जिनका अध्ययन “ सुरत शब्द योग ” द्वारा किया जाता है !

इसी को Cosmic Body कहते हैं !

बैठो चेतन केन्द्र पर,

त्याग देह अभ्यास !

मोक्ष, मुक्ति और सुमति सब,

सब सुख तेरे पास !!

माया के संसार में,

शिव के धनुष का खेल !

शिव के धनुष को तोड़ दो,

परमधार से मेल !!

सुरतीर, मन धनुष पर,

लक्ष्य हो केवल सत्य !

चाप, तीर को सहजकर,

भेदों लक्ष्य जो सत्य !!

चेतनधार को भेदना,

केवल “ सुरत ” के बाण !

सहज दृष्टि से भेदकर,

पावो पद निर्वाण !!

मंडल, ब्रह्म और गगन में,

उतरै चेतन धार !

मन, बुद्धि, हृदय चेतन करे,

जीव मुक्त और पार !!

साधना “ देंहों ” की कर रहे,
कैसे मिले विदेह !

कारण, महाकारण, सूक्ष्म भी,
यह सब तेरी देह !!

अनहृदनाद , प्रकाश सब,
कोश है और शरीर !

“ बैराग्य ” में त्यागो सभी को,
केवल “ आत्म ” तीर !!

अध्यास देह के त्याग सब,

जीव हो सन्मुख आत्म !

भक्ती चेतन की करो,

जीव बने परमात्म !!

दुर्लभ मनुज शरीर है,

दुर्लभ इच्छा हरिनाम !

दुर्लभ सद्गुरु मिलन है,

सबसे दुर्लभ सतनाम !!

शरणागति और समर्पण,

दोनों दुर्लभ होय !

सद्गुरु यदि अपनाय ले,

सबसे दुर्लभ सोय !!

परिवर्तन सब स्वयं हो,

मोक्ष, मुक्ति सब होय !

स्वयं घटित सतनाम है,

जीव जो जानङ्ग कोय !!

दुर्लभ, सन्मुख भक्ति है,
ब्रह्म और आत्म भेद !

केवल सत्य को जानना,
सबसे दुर्लभ सौय !!

विद्या, ज्ञान घटित सब,
दुर्लभ सतगुरु पंथ !

कृपा दृष्टि हो जीव पर,
जानों सतगुरु पंथ !!

सुरेशा दयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)